International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

Lokeshwari Tiwari[1], Dr. Saroj Nayer[2]

[1]Research Scholar, Kalinga University Raipur
[2]Department of Education Kalinga University Raipur

सारांश

विद्यालय में जाने वाले बच्चे के लिए समाज की स्वीकृति अत्यंत महत्व रखती है जो बच्चा समाज द्वारा स्वीकृत कर लिया जाता है, वह विद्यालय में आसानी से समायोजित हो जाता है। साधारणतयाः वे विद्यार्थी जिनका सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होता है, वे विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के बीच आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। दूसरी ओर निम्न सामाजिक स्तर के विद्यार्थी विद्यालय में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते। सामाजिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक कर उपलब्धि पर भी सीधा प्रभाव डालता है। यह विद्यार्थियों में पृथकता एवं असमानता की भावना उत्पन्न करता है। प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार निम्न सामाजिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन क्षमता उच्च सामाजिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा कम पाई गयी।

प्रस्तावना

वर्तमान परिदृश्य में यह देखा गया है कि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों का विद्यालयीन परिवेश में समायोजन अलग–अलग होता है। जिन किशोरों का समाजार्थिक स्तर उच्च होता है वे शाला में स्वयं को आसानी से समायोजित कर लेते हैं तथा मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोर भी कुछ सीमा तक सामान्यतः समायोजित हो जाते हैं किन्तु निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोर विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

क्योंकि विद्यार्थी जब तक पूर्णतः स्वयं को समायोजित नहीं करेंगे तब तक वे शिक्षा में अपना ध्यान नहीं लगा पाएंगे। इसका दूसरा कारण यह भी है कि उच्च समाजार्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समक्ष सभी प्रकार की भौतिक, आर्थिक एवं अन्य सुख–सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

मध्यम समाजार्थिक स्तर के विद्यार्थी प्राप्त शिक्षण सुविधाओं में ही कठिन परिश्रम द्वारा अपनी शैक्षिक उपलब्धि उच्च बनाते हैं लेकिन निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के पास धनाभाव एक प्रमुख कारक होता है जिसके कारण उन्हें उपयुक्त शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

शोध के उद्देश्य

शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक–आर्थिक स्तर के संदर्भ में ज्ञात करना।
2. किशोरों की समायोजन क्षमता सामाजिक–आर्थिक स्तर के संदर्भ में ज्ञात करना।
3. किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी समायोजन क्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पनाए

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित निर्मित की गयीं –

1. उच्च और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. उच्च और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
4. उच्च और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
5. मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
6. उच्च और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
7. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
8. मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
9. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

परिसीमन–

- प्रस्तुत शोध का परिसीमन रामगढ जिले की उच्च माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक है।
- यह अनुसंधान कार्य. जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित किया गया।
- प्रस्तुत अनुसंधान में केवल शासकीय विद्यालयों को लिया गया।
- यह अनुसंधान केवल माध्यमिक शिक्षा मण्डल रामगढ़ के अन्तर्गत आने वाले विधार्थियों के लिए किया गया।
- ये सभी नियमित विधार्थी हिन्दी माध्यम से ही लिया गया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

राठौर तथा मिश्रा (2015) ने शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विधार्थियों का लिंग के आधार पर समायोजन तथा सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अनुसंधानार्थी ने अपने अध्ययन हेतु इन्दौर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 छात्र व 100 छात्राओं का चयन किया। अध्ययन में इन्होनें पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक थी व उनका समायोजन भी उच्च था।

एहमर, अनवर (2013) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि था

सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सम्बन्ध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रुप में 200 हायर सेकेण्डरी के विधार्थियों को लिया गया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए– (1) हायर सेकेण्डरी स्तर पर लिंग उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है। (2) उपलब्धि को सामाजिक आर्थिक स्तर प्रभावित करता है अर्थात सामाजिक आर्थिक स्तर जितना अच्छा होता है वह उतना बेहतर प्रदर्शन करता है।

ऑकियोजा (2013) द्वारा किसी विश्वविघालय के महाविधालय के विधार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अनुसंधान का उद्देश्य था केन्या की पब्लिक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर परिवार की सामाजिक आर्थिक स्तर के योगदान का अध्ययन करना। स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओ प्रतिदर्श के रूप में 186 को किस्सी विश्वविद्यालय महाविद्यालय से चयन किया। ये सभी छः विभागो से यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा चयन किए गए। सम्पूर्ण समष्टि द्वितीय वर्ष के 242, तृतीय वर्ष के 84 तथा चतुर्थ वर्ष के 74 विद्यार्थियों से मिलकर बनी थी, तथा कुल समष्टि 400 विद्यार्थियों की थी। प्रथम वर्ष को सम्मिलित नहीं किया गया क्योंकि प्रथम वर्ष के विद्यार्थी महाविद्यालय परीक्षा प्रारूप में समायोजित नहीं हो पाते हैं। उपकरण हेतु प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अनुसंधान के परिणाम यह बताते है कि 94 प्रतिशत उत्तरदाता ये मानते है कि सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि धनात्मक रूप से शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है जबकि प्रतिशत यह दर्शाते है कि सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कारण यह माना गया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले पालक बच्चों को पूर्ण सुविधाएं देते है। मध्यम स्तर के पालक बच्चों के शिक्षा में सक्रीय भूमिका निभाते है तथा बच्चो का विकास नियंत्रित व व्यवस्थित गतिविधियों द्वारा करते है जबकि निम्न स्तर के पालक इतना भी अपने बच्चो के लिए नहीं कर पाते! आँकडो का विश्लेषण ANOVA द्वारा किया गया।

एनीथा व अन्य (2013) द्वारा सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि के स्तरों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य नवीं कक्षा (सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों) के विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि स्तर का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु इन्होने सिकन्दराबाद के 240 विद्यार्थियों जिसमें से 120 छात्र व 120 छात्राएँ थी को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया। ये सभी कक्षा नवीं के विद्यार्थी थे। न्यादर्शों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा विभिन्न सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों से किया गया। अपने अध्ययन में इन्होने पाया कि सरकारी व प्राइवेट विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुबुद्धिमता के स्तर में सार्थक अन्तर है। छात्राओं की बुद्धिमता का स्तर छात्रों की तुलना में उच्च है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी तीन क्षेत्रों जैसे – तार्किक,

अन्तरव्यैक्तिक व अन्तराव्यैक्तिक क्षेत्र में प्राइवेट विद्यालय के विद्यार्थियों से उत्कृष्ट पाये गये साथ हीं छात्र आध्यात्मिक व प्राकृतिक बुद्धिमता में अच्छे पाये गये।

डेनिज (2013) द्वारा भावी शिक्षकों में सांवेगिक बुद्धि व समस्या समाधान कौशल के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य सांवेगिक बुद्धि तथा समस्या समाधान कौशल के मध्य संबंध की जांच करना था, अध्ययन हेतु मुगला विश्वविद्यालय टर्की के 386 छात्र अध्यापकों (जिसमें 224 छात्राएं व 182 छात्र सम्मिलित थे) को प्रतिदर्श के रुप में लिया गया। न्यादर्शों के चयन के लिए यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का उपयोग किया गया। सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु बार–आन (1997) द्वारा निर्मित बार–आन इमोशनल कोसेन्ट इन्वेन्टरी तथा समस्या समाधान कौशल हेतु हेप्नर (1993) द्वारा निर्मित समस्या समाधान इन्वेन्टरी का प्रयोग उपकरण के रुप में किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सांवेगिक बुद्धि सार्थक रुप से समस्या समाधान कौशल से सहसम्बन्धित है। सांवेगिक बुद्धि में विकास करके समस्या समाधान कौशल को सुधारा जा सकता है।

शोध विधि – शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध हेतु रामगढ जिले की 4 उच्चतर माध्यमिक शालाओं के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (100 बालक, 100 बालिकाओं) का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया।

उपकरण – प्रयुक्त उपकरण निम्नानुसार हैं –

1. **समाजार्थिक स्तर मापनी** – सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना।
2. **समायोजन क्षमता मापनी** – श्री ए.के. सिंह एवं ए. सेन गुप्ता।
3. **स्वनिर्मित उपकरण** – शैक्षिक उपलब्धि मापनी।

चर – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. **स्वतंत्र चर** – समाजार्थिक स्तर
2. **आश्रित चर** – शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन स्तर

सांख्यिकीय विश्लेषण –
प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबंध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक 1 – "उच्च और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 1 उच्च व मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	31.31	4.44	11.35	123	11.35	0.05 विश्वास स्तर पर
2	मध्यम	70	22	4.75				

उच्च व मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि के कुल प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 31.31 एवं 22 है, प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.44 एवं 4.75 है, दोनों समूहों के मध्यमान में अंतर की मानक त्रुटि 0.82 प्राप्त हुई सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। क्रांतिक अनुपात का मान 11.35 प्राप्त हुआ जो 5ः विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारिणी मान से अधिक है। इसलिए सार्थक अंतर पाया गया। अतः उप परिकल्पना क्रमांक – 4 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 2 – ‘‘मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।’’

सारिणी क्रमांक – 2 मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का
सारणीयन :–

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	मध्यम	70	22	4.75	1.8	143	1.88	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	20.5	4.9				

गणना के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 1.88 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से कम है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक –2 की पुष्टि नहीं हुई।

परिकल्पना क्रमांक 3 – ”उच्च और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।“

सारिणी क्रमांक – 3 उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	31.31	4.44	13.18	128	13.18	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	20.5	4.9				

गणना से क्रांतिक अनुपात का मान 13.18 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक 3 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 4 – उच्च और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक – 4 उच्च व मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	125.55	16.5	7.29	123	7.29	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	मध्यम	70	105	14.5				

आंकड़ों के विश्लेषण से क्रांतिक अनुपात का मान 7.29 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उपपरिकल्पना क्रमांक–4 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 5 – मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक –5 मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता का सारणीयन :–

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	मध्यम	70	105	14.5	6.12	143	6.12	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	82.73	18.6				

आंकड़ों के विश्लेषण से क्रांतिक अनुपात का मान 6.12 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक–5 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्र. 6 – उच्च और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक 6

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांको का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ	सी. आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	125.55	16.5	13.68	128	13.68	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	82.73	18.6				

क्रांतिक अनुपात की गणना के आधार पर 13.68 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक–6 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 7– "उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।"

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन क्षमता के कुल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान 0.16 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना 7 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 8 – मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।"

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि व समयोजन क्षमता के कूल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान 0.21 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना क्र. 8 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 9 – निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।"

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के कुल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान 0.37 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना क्र 9 की पुष्टि हुई। उच्च, मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया अर्थात् समायोजन अधिक होगा तो शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होगी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकडों के सांख्यिकी विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे निम्नलिखित हैं –

a. मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई।
b. मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा अधिक पायी गई ।
c. जिन किशोरों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होता है उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च होती है।
d. मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता से अधिक होती है।
e. उच्च, मध्यम, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध है अर्थात् जिन किशोरों की समायोजन क्षमता उच्च होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।

सुझाव – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत है –

a. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रतिभाशाली बालकों को विशेष आर्थिक व शैक्षिक सुविधायें जैसे पुस्तकें, कापियाँ व अन्य लेखन सामग्री शैक्षिक मार्गदर्शन एवं आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
b. शिक्षक अभिभावक संघ को मजबूत बनाया जाए ताकि वे विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान कर सकें ।
c. प्रत्येक बालक को उनकी अभिक्षमता के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जाये ताकि वह अपनी प्रतिभा का समुचित विकास कर सके।

d. विद्यालय में विभिन्न पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए ताकि विद्यार्थी अपनी रचनात्मक व क्रियात्मक शक्तियों को अभिव्यक्त कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. भटनागर : अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया।
[2]. सिंग, अरूण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान।
[3]. अग्रवाल, जे.सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध. आगराः विनोद पुस्तक मंदिरअत्री,
[4]. वी.के. (2005). शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार. नई दिल्लीः सुमित इन्टरप्राइजेस.
[5]. भटनागर ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन आर.लाल बुक डिपो, मेरठ,
[6]. भगवान (2006). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः ओमेगा पब्लिकेशन्स.
[7]. गुप्ता, एस.पी. (2004). अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन
[8]. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन .
[9]. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर
[10]. पी. एवं गर्ग, एस. (2016). भारत में शिक्षा : स्थिति, समस्याएं एवं मुद्दे. अग्रवाल पब्लिकेशन
[11]. एस. (1995). शैक्षिक तकनीकी. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. राष्ट्रीय पाठयचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय. नई दिल्ली : शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005.
[12]. पाल, हंसराज (2006), प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, नई दिल्ली
[13]. पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता (2007). प्रतिभाशालियों की शिक्षा .नई दिल्लीः क्षिप्रा पब्लिकेशन्स
[14]. डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेडपाठक,
[15]. पी.डी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2
[16]. शर्मा, आर. ए. (2004), शिक्षा अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[17]. शर्मा, आर. ए. (2005), अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[18]. शर्मा, आर. ए. (2005), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[19]. शर्मा, आर. ए. (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.